गीत गौला डानिमा

[कुमाऊंनी गीत एवं सम्वाद]

संग्रहकर्ता :
श्री राम सिंह रावत
ग्राम-पाली, पत्रालय गनियाद्योली
जिला अल्मोड़ा (उ. प्र.)

प्रकाशक:
पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

प्रकाशन विभाग:
कुमाऊनी साहित्य सदन
चौरासी घण्टा बाजार सीताराम देहली-६

प्रथम संस्करण २०००] जून १९८६ [

Rs 10-00

गीत गौला डानिमा

[कुमाउंनी गीत एवं सम्वाद]

संग्रहकर्ता :
श्री राम सिंह रावत
ग्राम-पाली, पत्रालय गनियाद्योली
जिला अल्मोड़ा (उ. प्र.)

प्रकाशक :
पुरुषोत्तमदत्त पालीवाल

प्रकाशन विभाग :
कुमाउंनी साहित्य मन्डल
चौरासी घण्टा बाजार सीताराम दिल्ली-६

म संस्करण २०००] अप्रैल १९७९ Rs 10-00 स

शोक प्रस्ताव

[जन्म १९१६] [देहान्त २०-३-७९]

ग्राम कमराड़ बाजार सीताराम दिल्ली

कुमाउंनी साहित्य मंडल के सभी सदस्य तथा कार्यकर्ता प्रसिद्ध कुमाउंनी कवि श्री चिन्तामणि पालीवाल के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं। श्री चिन्तामणी जी सरल और सीधे साधे व्यक्ति थे जिनका जीवन संघर्षमय रहा। उन्होंने कुमाउंनी साहित्य की तथा समाज की बड़ी सेवा की। उनका साहित्य समाज का मार्गदर्शक है और उसके माध्यम से वे सदा अमर रहेंगे। यह सभा उनके निधन से बहुत दुखी हुई है। उनके स्थान की पूर्ति असम्भव है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उनके दुखी परिवार को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति दे तथा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे हम सभी कार्यकर्त्ता उनके निधन पर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

सभी सदस्य व कार्यकर्ता

कुमाउंनी साहित्य मन्डल

प्रसिद्ध कुमाउंनी कवि स्व० चिन्तामणि पालीवाल को

श्रद्धांजलि

कुमाउंनी साहित्य मण्डल के तत्वाधान में जवाहरलाल नेहरू मार्ग में आयोजित शोक सभा में स्व० चिन्तामणि पालीवाल को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा की अध्यक्षता श्री कुलानन्द भारतीय संरक्षक कुमाउंनी साहित्य मण्डल द्वारा की गई। श्री भारतीय जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री चिन्तामणि पालीवाल एक लोकप्रिय तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति में समर्थ कवि थे। उनके निधन से कुमाउंनी साहित्य की अपार क्षति हुई है। मण्डल के सचिव श्री नरसिंह होत बिष्ट ने श्री पालीवाल के साथ बिताए हुए दिनों के संस्मरण सुनाए और कहा कि उनके निधन से मुझे लग रहा है कि परिवार का ही कोई व्यक्ति चल बसा है। श्री एम. एस. मेहरा सम्पादक हिन्दुस्तान समाचार ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे कुमाऊंनी साहित्य के तुलसीदास थे। श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डा० नारायण दत्त पालीवाल ने कहा कि हिन्दी के अनेक प्रसिद्ध कवियों की भांति श्री चिन्तामणि पालीवाल का जीवन भी संघर्षमय रहा। परन्तु गरीबी, संघर्ष और आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने सदा जीवन के उच्च मूल्यों की रक्षा की और समाज को अपने साहित्य के माध्यम से सही दिशा दिखाई। मौलिक साहित्य प्रकाशन के श्री नारायण दत्त मिश्र ने कहा कि एक कवि के रूप में श्री चिन्तामणि जी सदा अमर रहेंगे। श्री कृष्णानन्द पालीवाल ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट किया तथा मण्डल के प्रचार मंत्री श्री अम्बादत्त पालीवाल ने श्रद्धांजलि दी। मण्डल के अध्यक्ष श्री राधावल्लभ पंत जी ने आभार प्रकट करते हुए उनके जीवन के मार्मिक संस्मरण सुनाए। श्री कमल सिंह बसनाल बिष्ट ने भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री भगत सिंह ...शाही ने कहा कि पण्डित चिन्तामणि पालीवाल सादगी के जीते ...उदाहरण थे और अपनी धुन के पक्के थे। उन्होंने समाज को ... दिया।

...दो मिनट का मौन धारण कर स्व० आत्मा की शान्ति के लिए ...त की। सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि एक शोक ... कर दु:खी परिवार की सांत्वना के लिए संवेदना प्रकट करते ... श्री पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल के पास भेज दिया जावे।

प्रेषक :-डा० नारायण दत्त पालीवाल

दो शब्द

आदरणीय

पाठक लोगों मैं आपू लोगों क बड़े अभारी छो कि आपू लोगू ल म्यर य टयड़-बांग गीत कैं बड़ चावलै अपनाछ। मकैं गीत लिखण में सहायता दे, और म्यर साहस बड़ा। मैं उन लोगों कैं भूली नी सकन मैं अपण सहायक लोगों नाम पाटको सामणी धरनु। इन लोंगों में श्री पदमसिंह रौतेला, सहायक अध्यापक, प्रा० पा० शशीखान, विकास खण्ड ताड़ीखेत, जिला अल्मोड़ा (उ० प्र०) वालों में बड़ गुनाहगार छो। किलकी इनुलें म्यर गीतों पर आपण मूल्यवान समय दि बेर। म्यर गीतों में रयी सब गलतियों कैं दूर कर गीतों कैं रसील बनाछ, और लै कई लोग छ जसैं की श्री नन्दनसिह जेष्ट अध्यापक सिपाही श्री बुद्धीसिंह रावत श्री आनसिंह रावत श्री गोपाल सिंह रावत आदि लोगों क लें मैं बड़ अभारी छो। इन सब लोगों लै गीत लिखण में मकैं साहस व धैर्य लै काम लिणै शिक्षा दी। मैं इन सब लोगों अभार प्रकट करनु। मकैं पूर विश्वास छो कि म्यर गीतों सब जग स्वागत होल यो गीत पाठकों कें प्रभावित करील, और पाठकों क मन में सुख शान्ती पैंद करील, मैं आपण (गीत गोला डानिमा) सब गलती लिजी क्षमा मांगनु।

मैं आपण भाई—रामू

राम सिंह रावत

ग्राम पाली

शुभ कामना

श्री रामसिंह रावत कुमाऊ क होनहार तथा नई गीत लेखणी कवि छैं। रावत ज्युकी मौजूदा किताब 'गीत गौला डानिमा' नामक कै सबै गीतों कै मैके पढ़णक व सुणणक कई बार मौक मिलो और इन गीतों में वे मैं भलिभांति परिचित छौ। रावत ज्युकी पैली कृति गीत गौला डानिमा की मैं शुभ कामना करनु और आस करनु की जनता इन गीतों के स्वागत करली। मैं आस करनु की भविष्य में लै रावत ज्यु गीत लिखी वे हमर मनोरंजन करील।

धन्यवाद

पदमसिंह रौतेला म० अ०
प्रा० पा० शशिखान
पो० गनियाद्योली

श्री राम सिंह रावत द्वारा कुमाउंनी भाषा में लिखी गई गीतों की पुस्तक के शुभकामना संदेश के अनुरोध के संदर्भ में देखें। लेखक ने समाज में फैली बुराइयों की आलोचना की है। और अच्छे कार्य करने और सही मार्ग पर चलने का संदेश दिया है। इस पुस्तक के प्रकाशन का कार्य कुमाउंनी साहित्य मण्डल के संस्थापक सदस्य तथा प्रसिद्ध कुमाऊंनी कवि स्व० चिन्तामणि पालीवाल के जीवन के अन्तिम दिनों में आरम्भ हो चुका था। उनके काव्य में भी जीवन के ऊंचे आदर्शों का संदेश रहता था। यह प्रकाशन स्वर्गीय चिन्तामणि पालीवाल जी की पावन में मण्डल का पुष्प है जो श्रद्धापूर्वक उन्हें समर्पित है।

डा० नारायणदत्त पालीवाल
अवर सचिव (भाषा)
दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

नई साहित्य मुद्रक चौरासी घंटा, बाजार सीताराम दिल्ली

गीत गौला डानिमा

श्री बागसिंह जी घुगत्याल कुमाऊनी गीतकारों में सर्वप्रथम गीतकार हैं जिन्होंने फिल्मी गीतों की तर्जों पर कुमाऊनी गीत लिखकर साहित्य मण्डल को प्रेषित किया है। इससे पहले इनके दो गीत "कुमाऊँनी लोक गीतों की क्यारी" नामक पुस्तिका में छपे हैं। श्री घुगुत्याल जी कुमाऊँनी बोली के नवोदित गीतकार हैं। इनके गीतों में प्राकृतिक वर्णन अपनी जन्म भूमि की याद दिलाता है। कुमाऊँ के ऊँचे-ऊँचे पर्वतों में इनके गीत लहराते हुए कह रहे हैं :—

गीत तर्ज :— (गीत गाया पत्थरों ने)

कौं लै लेखूं पहाड़ा तेरी कहानी।
ब्याखुली बखता हम रछी डानि॥
धन मेरो पहाड़ै डानि।
सब तेरी शरण आनी॥
गीला गौला डानिमा ब्याखुली का तारमा।
मुरुली बाजि सारोमा, गात गौला डानिमा॥
गीत गौला.....
के भली रिता, पहाड़ौं को रीता।
कौं लै लेखू हम पहाड़ो का गीता॥
गाड़ गध्यरा पाणी सिसाटा हव जो चलीं डानिमा
गीत गौला
के भली डानि पहाड़ो की डानि।
कौं लैं लेखू डानि तेरी कहानी॥
धस्यरा जानि डानिमा डाल धरिबै कानिम
गीत गौला डानिमा

गौरी त्यर गौ छ बड़े भल

(तर्ज : फिल्म चित्तचोर : गौरी तेरा गांव बड़ा प्यारा)

१ गौरी त्यर गौ छू बड़े भल जो येतो रहल ।
जाल कसिका २ गौरी त्यर गौ छू बड़े भल ।।

२ कांकी छैं तू पांणी पन्यारी कांकी छै तू नारी ।
हरिया भरया मालू कोछै तू घस्यारी ।
भरिगे तेरो घाकि डालि, घरकै सासु तिहैं रिसाली ।।
हिट घरा ये, गौरी·····

३ इन खनू मुरुली बाजि सारी छू हरिया ।
त्यर गौ में आवै गोरी हिया जा भरिया ।।
एक बार जो येती ए जाल उ कसीका जाल !
जाल कसीका ·····

४ रंग बिरंगी फूल छै येतो फूलों की खुशबू न्यारी ।
मैं लै आनू तेरी सारी जागि जा ये घस्यारी ।।
धन धन तैरो गो कि सारी सारिमा कोछै तू घस्यारी ।
है गे अबेरा, २ गोरी·····

५ हिसाई किलमोड़ी पाकी तेरी गौ को डानी ।
तेरी गौ कि डानिये गौरी बुकै जस खानी ।।
बड़े भलि तेरो गौ कि डानि डानिमा ।
खेरी नी पिड़ानी वो हो हो डानि रे ।।
गौरी त्यरा गौ छू बड़ भल जो येतो रहल·····

लेखक:—
बागसिंह घुगत्याल 'बाजन'

शराब प्योंछा रम

गोपुली च्यलो पढ़ो इस्कूला साबर बनो तुम।
बाप खेलुछा जुआ दुकान शराब प्योंछा रम॥

रे सुर शराब न पिओ तुम तिलुवे की दुकान।
हैखिक फजित हल भुख मरील नान॥ गोपुली…

परोधा जांछ जुआ खेलखा सारी दुकानों मजी।
इस्कूली नना पाखों टिटाट चुगली कला भाजी॥ गोपुली–

जुआ खेलखा जांछ रे नन देबीया दूध्याव।
स्याव उज्यार जुआ खेलैछा घर हैं आंछ ब्याव। गो…

माजिल च्यले भली अकर कुली काम करछ।
दिन भरी पथर मारछ ब्याव जिमीया ल्याछ। गोपुली…

ठुल च्यलै आदत खराब रमीया गोय भाजो।
जुआ खेलणम पकड़ी गोय जिबुआ गोठ मजी॥ गोपुली–

बाबू का यस ठाठ है रयी जस रहीसों घर।
ब्याव खाहणो विखुवा नहै सुग को भर फर॥ गोपुली…

गोपुली यस करम हय जम नेरणु जांगो झोली।
दिन भरी कंकरेट मारीछा ब्याव फुकीछा चुलो। गोपुली…

गोपुली च्यलो पढ़ इस्कूला साबर बनो तुम।
बाप खेलूछा जुआ दुकान शराब प्योंछा रम॥

—:*:—

अशोजक मैना

ओ मेरी इजु मैं आम् सरास आज ।
असोजक मैना लैरो सुब काम काज ।।
असोज क महिना मैं चड़किल धाम ।
लागी रौ अशोज इजु नै बेठया टैम ।।
काम धन्ध मौक मज्जी किलकी पड़ियना ।
आणत जहुं हय आजें न्है आया ।। ओ मेरी...

❀

दिन भरी खेतों मजि काम लै करन् ।
सासू हैगे बुड़ी मेरो आफी पकै खान् ।।
नत रात दिन भरो मुख लै है जान् ।
ऐसी जागो बिवाईया कसिक बैठन् ।। ओ मेरी...

❀

दिनमा खणक कभै टैम नि लागुन ।
काम धन्ध करण लैं उदेखी आ मन ।।
रत ब्याणि आई बेर ब्वाव घर आन् ।
दिन भरी खेत मजि फसल काटन् ।। ओ मेरी...

❀

सारी फसल पाकी अशोजक मैना ।
नाज बटोवण कसिक बैठना ।।
मेरी ईजा यस काम काज ।
णि पठयै दे तु न्है जान् आज ।। ओ मेरी...

हिटो भ्वड़ गौल

ओ दिदी ओ भुला हिटौ वड़ भगख।
आज वति लागो गोछा चैतक महिण॥

आज भ्वड़ के थड़म कति कखि तौला।
सब झड़ भया तुम तब मिलै ग्रोछा॥

भ्वड़ यक ग्रौला हम आज सब झड़िया।
भज भ्वड़ हमु भज्ञि को हय गणिया॥

भ्वड़ गण जौला आज सभापति घर।
शुरू वाद उति हली स्वर झर फर॥

देवकी परुली आली और आली बचूली।
पारेकी राधिका आली मुणै की गोपुली॥

रमीया ग्वौरा घुसुछा रंग मुख पारी।
रंगील चैतक मैख दपड़ें ऐ होरी॥

भ्वड़ गख माज ग्वोर खिचोरी करील।
रंग की पिचकारी कखि मुख में मरील॥

घर कणि पति देव नराज है जैल।
कैल रंग लगा कवै मिहणि रीसैल॥

चाहे रिसै पति देव गलड़ है लाल।
ज्याण कस होछा भली आधिल क सा

११

हरीद्वार नै जौला

एकै बेर मेरी इजू हरीद्वार जै जौला ।
उतरैणी कौतीक ऐगो हरीद्वारनै जौला ॥
तल बाखई मल बाखई सब छ जाणिया ।
हमर गौवैं सब भला हरीद्वार नाणिया ॥
हमर गौवे नाणिया कि जाण में बरयात !
मलीक तिजौल इजा पकड़ी २ हात ॥
मैंले की लिजानू इजा त्यकणि नाहणि ।
तु तैयार हैजा इजा क्वारी बनालो खाहणि ॥
काम धन्ध नन तिन आफी करी लिला !
हिट इजा कै जौला गाड़ी क सफर ॥
आखिन की फिर इजा कै करणि आस ।
चार दिन न्है गोछ पड़णो छौ सास ॥
नौ लाख यन्त उती वैं भगवानों क वास ।
स्यर धारम क दिन हय गबम क गास ॥
हरि हरिद्वार मजि हर ज्यू को धूणों ।
नखा क दुखम हैगो हर ज्यू स्याहणी ॥

घुघुती चड़ी

य घुघु करण घुघुती चड़ी छा ।
छोटी मोटी भूरा रंग के भलो लगदी छा ।।
कम छु रंग यक के भली देखी छा ।
घु-घु की रटा किलै लगीं छा ।।
आमै डाई बैठी बटी गीत गाग रैछा ।
सुख दुख बातो कै हमु सुणा रैछा ।। य घुघु…
तेरी बोली निपमस्क नी आय अन्दाज
की त्यकणि मन्म लागी कै बात छ आज ।।
तु घुरू-घुरू करनै अब गैहैन्ती थाकी ।
लै जग से मात खल य रई छा बाकी ।। य घुघु…
तेरी करोनो सुणी के अग्वाज नी आय ।
जै दिन तुमरो बली मैं चढ़ाणा आय ।।
मै क भगा तक त्यर जीवन रहै गोय ।
खाछ या नी खाय मैलै त्यर मन जलों रय ।। य घुघु…
जो मकछ उ नी खानों बाका सब खानी ।
दुनिया मैं सुख दुख लागिया रहनो ।।
किलै है घुरू घुरू कै की छा रटन ।
घु-घु करनै त्वीलै म्यर दुखै हैछा मन ।। य घुघु…

***

मेरी पहली

ओ मेरी पहली तु ऐजा पास ।
दिन न्हे गोड़ पड़ंगे सांस ॥
प्यार दिल मन ऐ गैछा तूफान ।
त्य पार ओ प्यार लागी रौ ध्यान ॥
मन म्यर कमिक मानण लै रौछा ।
म्यरत दिल पिघई लै गौछा ॥ ओ मेरी···
ओ मेरी पहली बात कै जा मानी ।
तु म्यर दगड़ किलै की निआनी ॥
त्यर बिना म्यर नि मानन मन ।
तु मेरी बात टालिए झन ॥ ओ मेरी···
तेरी खातिर मैं घर आथ छुट्टी ।
तु रीसै गयी म्यर दिल जाल टूटी ॥
तु जब नी आली बितली ज्यान पार ।
तकैं देखी बटी मकैं है जाछा साहार ॥ ओ मेरी...
जब तु नी आली हौल मौतें सम ।
तु निआली म्यर नजीक त्यकणि कसम ॥
यौ जाड़ों का दिना तु निहयी साथ ।
कनीक कटीला माणि जाड़ों लामी रात ॥ ओ मेरी...

मैंके जागी जा

ओ बाटा बटोई को छै तु जाणिया ।
मैके जागी जा मैलै छु अणिया ॥
मैत आख रयु पलटण वै असाम ।
स्योव वैठी जा तु लागो गोळ घाम ॥
रूणी का छौ दिना लै आल घामा ।
कती की जणिया केळ तेरो नामा ॥
यतुक तेज तु किलैक जाण रै छै ।
कि तु सरास वै माजी वै ऐ रै छै ॥
इकलै किलै आछें मै जा तु स्योव ।
एती आघिल पड़छ बड़ भारी जंगोव ॥
मैं पुजैं न्युला त्यकणि त घरा ।
मकै रूकी जा मैं छौ त्यर दगड़ा ॥
त्यकै त्यर घर मै पुजै द्युला ।
सबर की फाची मैं लिजै द्युला ॥
सरास छा जाण कि आण रैछा हैता ।
स्योव वैठी जा घाम लागीगो भौता ॥
पलटण वै आण रयु मैं आज घरा ।
जागी जा ओ जणिया मैं आनू दगड़ा ॥

चैतक महीना

कै भला फुल फुला पहाड़ों का डनौमा ।
न्है गो फाल्गुण लागीगो चैतक महीना ।।
चैतक महिण भौतै छु रंगील ।
डनौमा बुरुंसी का फुल चमकील ।।
फूल सग्यान ऐ गेछा चैतक महिणमा ।
भंवरों की रौनक ऐगें हमर गौनु गौनुमा ।।
डाव बोटाम मज ऐ गेछा हरीयाली ।
रंगील महिण चैत दगड़े ऐ होली ।।
सब भ्रूण खुशी खुशी भ्रवड़ गण जानी ।
चैतक महिण बटि कांफौव लै पाकनी ।।
चैतक महिण जरा देखो हो प्यार ।
डाव बोटी हरी हैगी फूलों की छु बहार ।।
मैतुआ च्येलियों कणि आव दी है जानो ।
आनें रयें ओ महिणा च्येली ब्वारी कनी ।।
खुशी २ कटी जानी य महिण दिना ।
आंत दीणी इथा उथा आघिन पछिना ।।
इन दिनों मज के भलो मानीयो पहाड़मा ।
च्येली बेटिया लागी रनी मैतुओ की आशमा ।।

होली

नाच गिना पाड़ हिलाट होली आई रे होली ।
वो सुना पहली बार रंग क्या है बोली
रंग ध्या तु आसमान में दौड़ता सूरज ।
ओ नि हुवो फरे में उगीखा नासूप
हेतुकी का घर एंगो ह मनोर न्हेली ।
सुबह होती क ट नना आसमान जोहेलो ।।
पनीया पनीया लै रंग हैको मुख ।
रंग हैको बादि हन तूकी गया हुआ ।।
रमीया आमान मीगे पिचकारी छिडेर ।
रंग हैकडव हिदी फल कया ढेर ।
निगान ऊ हयगा मुख बनै लिखा लाल ।।
रंग गुनी नुप पागी आंखा बेहाल ।।
रंग हाल रणि हिदी फल कया कमर ।
रमीया अबर्ी के तुम पिआया मदूर ।।
एक कदे रंग नयाय भाल दुकान पे ।
मकनी निकुल बना पन्यार बिके है ।। ।
कलक का दिन होली सूब ककका ।
बान्दी छिड़ेर आया मौसम पन्यार

ब्यारी

ना सूका ना सूक कुमपन ब्यारी ।
गुड्य ं प्राण प्रव कदल बयम धारा ।।
टयद नीं दिखा मदै में माधु तु ब्यारी ।
डाम मीं चपम माङ्कें तु मांगी मांगी ।। ना···
ब्याम मोह पना कुय नमार दिखङ्के ।
विम्मर मर्दै मे गङ्के प्रर ठंडा कङ्के ।। ना···
मारै-मरडै अब तु मोह बनार्भी रट ।
कबे बनार्भी कम फूल कबे जानर पाट ।। ना···
मोह बना ह्यो तु नीं मरनी मन टक ।
ङ्के माम बटि कंथ मै रङ्के तु कठ ।। ना···
ब्यार लै रस्ट माई तिम मनुज प्राम प्रम ।
मांग कतु मम हक सूण मरन कें मम ।। ना···
दिनमा हैम्मक निल माम घर-दर ।
एक तु बनङ्के माम मिन हनों नर-नर ।। ना···
ब्यांगी का सपणा हूंमां मैं न ओ हैरान ।
अम स्वै गेङ्क नहनांन ब्रान ।। ना···
ी का ठाट-बाट यम ह्यो मयायी ।
जु ऋ दूपव पनम कार बाव फूंकि गयी ।। ना···

ब्वारी

मेरी आलसी ब्वारी का यन छ हाला ।
रातीया जै घा है घर ऐछ ब्याला ॥
रातीया जै बै गफसफ लगानी ।
धूरपन स्योव बैठीये लै रनी ॥
घरै झगड़ै की बातों कै करनी ।
द्वि पुवा घां ल्गानी कमर हिलानी ॥
ब्वारी मेरी त येसी छ हितरू ।
आदत लिजीक हम कें करू ॥
घरै की बात सब कैछ घस्यार ।
जषीन खैछ च्यलै हाथें मार ॥
ब्याल घर ऐछ रेडू पार ब्यान ।
तीन कौड़ी नी छी खाली छ शान ॥
च्यल जै ऐ जाल बर-बरे जाली ।
चट-पट द्वि कप चहा बनें ब्याली ॥
च्यलै है ग्योक मल रन्ट पकैछा ।
म्यर हाथ पार सुकी रन्ट थमैछा ॥
ब्वारो की का लै लगानू बरखात ।
मरी जाण सबुलै रे जालो बा...

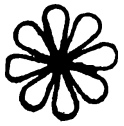

चनुवा बोकिया

चनुवा बोकीया न्हैगो ग्यौनी का खेतमा ।
क्या छै नी त्यानी ओ बौजी रेशमा ॥
चनुवे लै खाइली ग्यौं की बाई ।
बौजी लिख्या तु नतर मंगाली गाई ।
जब क्वे देखल मारण येनी आला ।
चनुवे लगा उ गोठ गोठये दयाला ॥
पार चै गों ैम देखण लैगई ।
बौजी तु किलक नी हकाया में रई ॥
बौजी तक्ड़ी न निन छ भौते ।
सारे बकार उज्याण न्है गीना चावे ॥
आपण बकरौ कैं मैं कतो छोड़ल ।
तु ता से जाली स्याव लै लिजाल ॥
पाग का गौं वै ऐ जाल माली ।
बकरा कैं सारे गोठ दयल डाली ॥
चनुवा दगड़ा और लै न्है गाना ।
बौजी पार है चाधैं गौं ैम ऐ गीना ॥
चनुवा बौकीया भाजी वै ऐं जाल ।
और बकरा खुट-२ गाठ न्है जाल ॥

✱

हिट बल्दा घर

हिट उल्दा घर हणी न जा तु उज्याड़ा ।
तकै गोठ डाली दयला में मारुला डाड़ा ।।
घर भज फिर म्यर ढाव आई जाल ।
उज्याड़ खवै म्याछै कै मैंक मारण आल ।।
चुल क जई मुच्छनव खरनट टकाली ।
बल्दा तेरी त खाड़म हली मैंत बहार ।।
मेरी सौतेली मां त मकै रात घरेली म्यार ।
येती गोठ वांटि तकै नीन्है जाला भोव ।।
सौतेली मां करी दयेली म्यर देश निकाव ।
सौतेली मां त मेरी में मारण आली ।।
औ मोतीया उज्याड़ नजा खेतों मजा ।
म्यर-त्यर मार खाणक नतर टैम ऐरै आजा ।।
तहै उज्याड़ नजा कैहैं बाकी कै गैई ।
पारा गौ का मैस ते देखण लै रई ।।
फिर लैं तु बल्दा लगा रछै जोर ।
मन त्यर हयी रछ खाहणो रे मार ।।
नजा-नजा तु बल्दा नी दिखा तु जोशा ।
सिकड़ै-घड़क लगौला तब जै आली होशा ।।

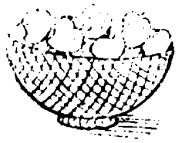

बकरों की गवाई

कती को रणीया कैकी तु ग्वारी छै ।
बकरों की ग्वाई किलक एै रै छै ।
क्ये नाम छा सौरा कनी घर छा ।
इकलै तु ग्वाई किलक एै रछा ।।
सौरा ज्यु त्यरा क्ये काम करनी ।
काम मज जै रई कि घर पन रनी ।।
भलीक एै रछै कि झगड़ करी रछ ।
स्वामी ज्यु त्यरा कामम कती छ ।।
बमस्यू म्यर सरास में पधानै ग्वारी छौ ।
द्योर जै री राणीखेत में बकरौ ग्वाई छौ ।।
जिवन सिंह सौरा बमस्यू का रणौ छौ ।
दिरानी जै री घास में बकरो ग्वाई छौ ।।
सौरा ज्यु करनी गौ कि पधानी ।
घर पन रनी तम्बाकू फूकनी ।।
द्वि दिन हैगी झगड़ है रछ ।
स्वामी ज्यु त म्यरा पलटण में छ ।।
स्वामी ज्यु त्यरा पलटण असाम ।
पधान क च्यल रमीया छ नाम ।।
स्वामी ज्यु त म्यर पलटण में छ ।
स्वामी ज्यु की म्यर खबर भली छ ।।

हिट दिदी बांज काटण

हिट दिदी बांज काटण ।
ओ भुला न्हे जौला बांज काटण ।।

हिटो दिदी आज पाला धूरा जौला ।
पाल धूर बै बांज काटो ल्यौला ।।

मैं बांज काटूला दिदी तुम सब उठाला ।
फिर के करूला दिदी जब पतरोल ऐ जाला ।।

जंगल क पतरौल जब आई जाल ।
त हमर हाथों ले बची बै नी जाल ।।

हम सब मिली बाट उकै बादी धूला ।
हम बांज काटी बेर घर भाजी औला ।।

पतरौल नी आम बांज काटी ल्योला ।
पधान क स्यार मज दुःख सुख लगौला ।।

हिटो दिदी पला धूरा बांज काटी ल्यौला ।
सासू मौर हैबै सुख लूकै रौला ।।

हिट दिदी हिट भुला बाँज काटण जौला ।
तब दिदी हम सावाली मंगौला ।।

हिटो दिदी बांज काटण ।
ओ भुला न्हे जाला बांज काटण ।

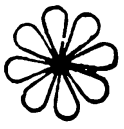

पार का स्योव जणीया

पार का स्योव जणीया कती तिवोले जाश ।
कती वटी तु ऐल रछे आश ।।
मैंत जाश स्यू मैंता है आपस ।
मैं ऐल सरास वैं मैंत स्यू जाश ।।
मैंल लै जाश छ सरास आपस ।
जरा रूकी जा मैं आनू दवड़ ।।
स्यर मैंत छा मेरी ब्या वैशीक ।
कमीक आछें दगड़ तु सैणीक ।।
साईक ब्या छ स्यर लै सरासा ।
जणीया जागी जी काम छ खास ।
स्यर स्वामी पार वैं जब ते देखला ।
स्यर टांग कै उ छोडी दयाला ।।
डर छी स्वामी उनो आनी दगड़ा ।
स्वामी है तिवोलें करी रछ झगड़ा ।।
शरम नी आ स्यी नो लगा बड़-बड़ ।
दातुल टूक बुडला जो आलै दगड़ ।।
मैल आ स्यु रूकी जा मेरी कला ।
गगास गाड़ मैं तकड़ी तारूला ।।

द्वि रष्ट कर्मै खौला

पहाड़ वै आई गोय अब के करौला ।
मोची मैला गौश्री द्वि रष्ट कर्मै खौला ॥
रे शहर आनों दल अब का जौला ।
क्ये काम नी मिल भुख अब या मरूला ॥
शहरौ क भाई लोग खाली हछ नाम ।
सब घुम मैल क्ये नी मिल काम ॥
सुणौ श्रष्ट भाई म्यर माजो भन आया ।
चाहैं खर मज तुम इकैं रष्ट खाया ॥
पहाड़ क रणी येनी भुख मरी जांछ ।
येती आई वटि मौतै पछ्तांछ ॥
शहरों में चैनी मष्ट और ताज ।
चोर भौत हैंगी गलीयौ मज ॥
तव येती होछ भगड़ फिसात ।
चोरों को भाई लोग नी हनी जात ॥
चोर क माल सब न्है जांछ ।
चोर करमों देखो आफी पछ्तांछ ॥
चोरी नी करण भाई भुख मरी जाण ।
ईज बौज्यु नाम चैन नी डुबाण ॥

ओ बौजी रेशमा

ओ बौजी रेशमा ओ बौजी रेशमा ।
वे त्यर दगड़ हम लै आनू देशमा ॥
द्वि दिन पहाड़ क ठन्ड पाणी पी जा ।
पहाड़ में वैद हयी मनुव रव्टौ खै जा ॥
द्विय दिन तु हमर धान जीले जाली ।
गोहता डूबूक दगै झुवरो भाता खाली ॥
हौव बाई जौला हम धान का खेतमा ।
बैलगाड़ी बल्दौ लै बौला धमा-धमा ॥
सांग-पात के नी हन मनुव रव्ट सुका ।
झुवगी क भात हल भटका डूबूका ॥
धान मांस गोहन कम कपै हनी ।
जौनी कणी गेजें चाड़ फटकी जानी ॥
ज्यौ गोईया श्वड़ मौत हैछ पाहड़ो खेतीमा ।
मोल लिवे दाउ खानू बजारें की हमां ॥
बौजी पहाड़ खेती मज दूग ब्यामी हनी ।
इनों मज फसल लै मुरझाई जानी ॥
पहाड़ कम जग पाणी लै मिलुछा ।
पाणी जै नी मिल बौजी फसल कसी हैछा ॥

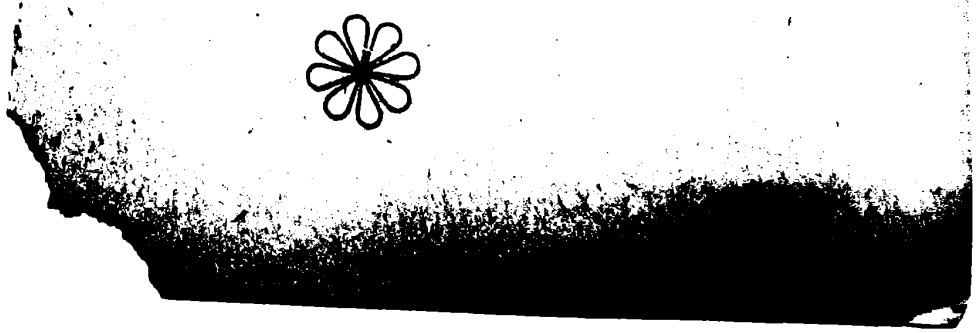

शाली

य मेरी शाली के भली कै बाना।
　　येकि दिदी छा कऊली खाली कोरी शाना॥
शाली क म्यर नौ छ कमला।
　　शाली लै के भली भिना लै के भला॥
आग जगौ री हिट तापूल आग।
　　नतरत जयी जाल गोठ हरी सांग॥
शाली क म्यर गलाड़ छ लाल।
　　लामी-२ लटी घुघराल बाल॥
परीयै की ईजा खाहणी बनाली।
　　शाली त मेगे म्यरा जु मारेली॥
शाई तु शरम करीये भना।
　　अब लागी गोछ ंगील महिना॥
शाई येती आई कतुक सालों मां।
　　हिट मेरी शाली क्ये बाते शरमा॥
शाली क खरम ंगील पिछोड़।
　　हिट मेरी शाली हम गौला भवर
आली भवड़ गण क्ये म्यर दगड़।
　　मेरी शाली का पास के भला लुक

हिट मेरी चखोरा

हिट मेरो चखोरा हिट घै चमाचम ।
स्यौराती क म्यल जौल भिकयासैणम ।।
भिकयासैण मज ओरक लागछ म्यल ।
येती म्यल देखणों कैं कशारी आछ रयल ।।
स्यौराती क म्यल हम लै देखी औला ।
मौसाती का दिना घर बती न्है जौला ।।
राणीखेत बै के मो गाड़ी येती जानै रनी ।
दूर-२ बटी दैस म्यल देखण आनी ।।
अलै बेर स्यौरात हम लै देखौला हम ।
हिट मेरी चखोरा जरा हिट घै चमाचम ।।
अलैं बेर सुण मैंल भारी म्यल लागल ।
भिकयासैण मजो नागर निमाड़ लै आल ।।
परै बेर येती माड़ी बड़ भारी म्यल हय ।
येतो माड़ी पारघत ब्रतू नगर आय ।।
मेता म्यल जाई बटी छक हयो गाय ।
रौनक देखन-देखनें मैं त थाकी गोय ।।
फिर एक दिन उती करछ ऐराम ।
हिट मेरी चखोरा घै चमाचम ।।

राम बण

राम बण न्है गया अजोध्या है गो सून ।
दसरत के प्राण न्है गय सब है गया रून ॥
राम बण जाण लाग सिता भई लाचार ।
धनुप हाथ में लीचै लच्मण हैगी तैयार ॥
राम ज्यू बण न्है गया बांजै कुटि बनाई ।
चार छै साल दगड़ रया पै सिता गे हराई ॥
सिता कै चानै-२ हनुमान गया मिली ।
सुग्रीव कै राज दियो मारी दियो बाली ॥
सिता क य पत लाग रावण लिगो चोरी ।
जटायु बिहोश हैर पंख हली टोड़ी ॥
खर-दुषण मरी दिया लंक रण माँ ।
लच्मण कै शक्ति लागी रण बिचमा ॥
सिता की चोरी देख बिभीषण उदास ।
लात रावणों लै मारी राम आय पास ॥
मेघनाथ रावण जस बीर सब मारी गई ।
मेघनाथ शिश पै सलोचना सती हुई ॥
सिता जी ली गई फिर अग्नी परीछा ।
दुष्ट लोगों नास हल य मिलछा शिछा ॥

कवि परिचय

पाठकों है हाथ जोड़ी करनु अरज ।
परीचय छि शब्द भतण फरज ।
फुटिया करम हय कै जनम पड़ ।
आपण लै पत भाई लेखी द्विनु ध्वड़ ॥
रामसिंह नौ छा म्यर राव छ जात ।
परिवारी जीवन की बड़ दुःख बात ॥
अल्मोड़ा जिला म्यर पाली म्यर गौ छा ।
राणीखेत नजदीक ध्वड़ दूर हौ छा ॥
गनिया द्यौली डाकखण छ मल सिलोर पटी ।
तहसील राणीखेत उमर छ छोटी ॥
कलकत मज म्यर हौ छीया जनम ।
जनमा का दिन बटी फुटी गो करम ॥
उन्नीस सौ अठावन जनम हौ छीया ।
बार साल बाद बौज्यु म्यर मरी गछीया ॥
श्री शेर सिंह छो म्यर बौज्यु नाम ।
कलकत मज बौज्यु कर छियां काम ॥
ज्यु क मरण बै गविड़ी गे दस ।
गरीबी लै दबै दिय हमु कणी यस ॥
पुलिस मजि बौज्यु छो नौकर ।
ये भिक हमरी बौज्यु कै छो गुजर ॥
यु क मरण बाद करी कार्यवाई ।
कुछ दिन बाद इज पेनसन पाई ॥

पेनसन ध्वड़ छा इजै कणी मिली ।
ऐसिकै बिपत मजी गुजरत चली ॥
के मदद करो दिया म्यर कक कौलै ।
आपणो विपत कणि मैं बतों कथालै ॥
इजु लै वैं नोंख मकैं इस्कूल पठाय ।
बड़ी मुश्किल मज खरच चलाय ॥
दस मैल पांस कर फिर छोड़ी दिया ।
पढ़िगिया छवट भाई पछिला वै छिया ॥
गोपाल क छवट भाई बसन्ती नौ बैणी ।
सब चीज मुश्किल हय इजै हणी ॥
इस्कुला पढ़ है कै म्यर निछी ध्यान ।
सनेमा देखुछी मैंत सारे दिन मान ॥
कुछ बुर दगड़ियों संगत गो पड़ी ।
जनर दगड़े वै मैं गोय बिगड़ी ॥
यक लिजा मैल तब इस्कुल दी छोड़ी ।
विद्यार्थी जीवन बटी रिस्त दिय टोड़ी ॥
आखिल लैं पढ़ण हणि इजैं लै मै कौय ।
आपणि हिम्मत देखी आफी हारी गो
अब सुणों म्यर भाई आखिल क हाल ।
बदली गो अब म्यर य पुराण रूप
जो जसी संगत कौछ तस फल पाल ।
मनुश बुतबौ जब स्यौ काबै न्य

भलीत संगत कया भली हली बात ।
नी फमण नकी जग में जोड़नू हात ॥
अपर इस्कुल येती हमर शशी खान ।
र्मांघल के बातों मज धरि लिया ध्यान ॥
अब सुणों जग भाई संगत की बात ।
श्री पदमसिंह मामाहर छी रौतेला की जात ॥
रौतेला ज ज्यर छिया हमर पल कुड़ पन ।
पहाड़ी गीतों का खुब उनु कणि धुन ॥
गीतों कणि खुब गेछी और लेखै छिया ।
पाहड़ी साहित्य कणि खुब माने छिया ॥
यस कैछी संगीत लै सब सुधरोला ।
भली बात संगीतम कभी बिगड़िला ॥
मैल मानी लिय तब उनर सुझाव ।
पैली २ गीत लेखी कै निभाय दाव ॥
जै दिन बै लेखी मैल कुमाऊनी गीत ।
कुसंगत बटी मेरी छुटि गेछा प्रीत ॥
अबता मैं भाई लोगों गीतों के लेखनु ।
जीवन का नका दिन हिंसी बै काटनु ॥
एक मेरी इज हथी एक नान बैणी ।
छुट्ट भाई इस्कूलिया निछ क्वे कमाणी ॥
बेरोजगार बैठी रयु दस निछ ठीक ।
घर में जमीन कम सहार भैसीक ॥

जस हल टयड वांग ल्यख लगै दिया ।
मुरख अज्ञान हय माफ करी दिया ।।
गरीबी में दगै रोय हाथ दिया थामी ।
गरीबी की डाँढ़ मज दगै रछ रामी ।।
गरीबी लै म्यर घर मारी हैंछ्रा भाड़ ।
जुमेदारी ख्वर मज पड़ी गोछ्रा जाड़ ।।
आपण सहयोगा क मैं भौत अभारी ।
सहयोग करी दिया जनुलै मी पारी ।।
पाठक सज्जन लोग मैं मन छोड़िया ।
बिपतिक मारीया छौ मुख नी मोड़िया ।।
तुम लोगों मैंछौ भागी बड़ा गुनागार ।
गरीबी लै वादी गोयू कमि आनु म्यार ।।
लेखण की शैली २ सुरुवाद करीया ।
गलतियों पारी म्यर ध्यान मन दिया ।।
कुमाऊँनी गीतों की छ य सारी किताब ।
पढ़ी लिया सुणी लिया देखी लिया आप ।।
य मेरी किताब आगे गीत गौला डानिमा ।
मैं गौठिया रय भाई गरीबीया छानिमा ।
आखिल लै और आजी मैं गीत लेखुल ।
भाई बन्वों सहयोग जब मैं देखुल ।
दुःखियैं की डाढ़ सुणी दया करी दिया ।
जै हवै जतुक हल मदद करीया ।
पाठक सज्जनौ हणि भौत करनु अभार ।
भाई बैणी सबु हणि रामी नमस्कार ।

शुभ सूचना

प्रिय बन्धुओ,

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि हमारे यहाँ पुस्तकें बेचने अलावा छपाई का भी प्रबन्ध है। निम्न प्रकार से आपको सेवा के लिए उपस्थित हैं :—

- विवाह, मुण्डन, गृह, प्रवेश, विजिटिंग कार्ड आदि बाजार से अच्छे तथा रियायत पर छापे जाते हैं।
- हिन्दी तथा अंग्रेजी टाइप में हर प्रकार का काम जैसे बिल बुक आर्डर बुक, बाऊचर, पोस्टर इश्तहार सभी काम बाजार से बेहतर होगा।
- हर प्रकार की कुमाऊनी तथा हिन्दी की धार्मिक पुस्तकें छपने का भी प्रबन्ध है। कर्मकाण्ड तथा पूजा-पाठ की पुस्तकें भी छपने का प्रबन्ध है।
- कलैण्डर तथा नए वर्ष की डायरियाँ भी हम अपने व्यापारियों को भेज सकते हैं।
- कार्यालयों तथा स्कूलों से छपी तथा विना छपी स्टेशनरी भी भेज सकते हैं।

उक्त संस्था कुमाऊनी साहित्य मुद्रक के नाम से जनवरी सन् १९७७ से छपाई यन्त्र का उद्घाटन कुमाऊनी साहित्य मण्डल के संरक्षक श्री कुलानन्द भारतीय जी ने किया था। तब से यह सुचारू रूप से चल रही है।

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक

हर प्रकार की पुस्तकें तथा उच्चकोटि की छपाई का एकमात्र

चौरासी घंटा, बाजार सीताराम, दिल्ली-११